समकालीन विश्व राजनीति

Chapter :- समकालीन दक्षिण एशिया

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

CLASSES AVAILABLE :-

6th to 10th

- Maths
- Science
- English
- Sst

11th & 12th

- Pol. Science
- History
- Economics
- Accounts
- Maths
- English
- sociology

C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi - 110041

M H Rabbani : 8700467219

(Chief Mentor & Coordinator)

@vidyadrishti

दक्षिण एशिया

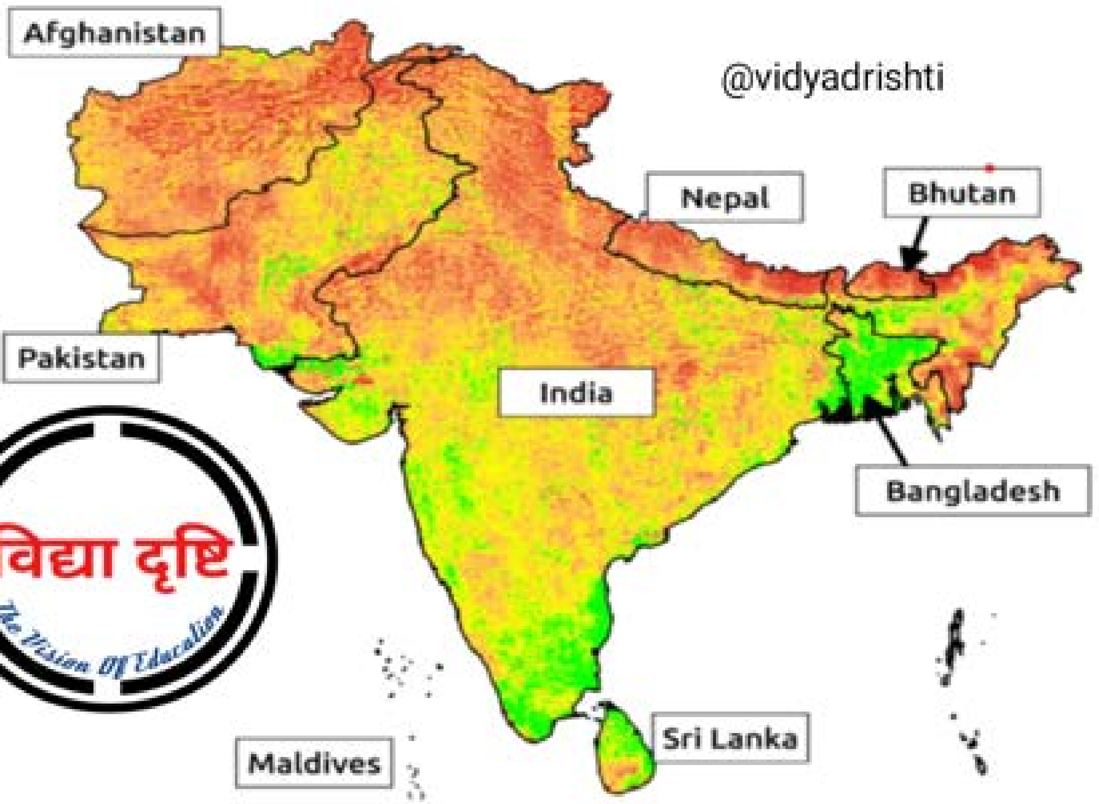

- एशिया महाद्वीप के दक्षिण मे स्थित।
- **सात देश :-** पाकिस्तान,भारत, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका, मालदीव
- **अफगानिस्तान एवं म्यामार** को भी कभी-कभी इस क्षेत्र में शामिल कर-लिया जाता है।
- **चीन** इस क्षेत्र का एक प्रमुख देश है लेकिन चीन को दक्षिण एशिया का अंग नहीं माना जाता है।

एक विशिष्ट प्राकृतिक क्षेत्र :-

(1) उत्तर में विशाल हिमालय पर्वत - श्रृंखला

(2) दक्षिण का हिन्द महासागर

@vidyadrishti

(3) पूर्व मे बंगाल की खाड़ी

(4) पश्चिम मे अरब सागर

- यह भौगोलिक विशिष्टता ही इस उपमहाद्वीपय क्षेत्र के भाषाई, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अनुठेपन के लिए जिम्मेदार है।
- **एक ही भू - धरातल पर स्थित सभी देश,परन्तु प्रत्येक देश अपनी विविधता और संस्कृति के कारण अपना अलग विशिष्ट पहचान रखती है।**

दक्षिण एशिया की विशेषता

- एक ऐसा क्षेत्र जहाँ सदभाव और शत्रुता, आशा और निराशा, पारस्परिक शंका और विश्वास साथ-साथ उपस्थिति हैं।
- एक ही भू राजनीतिक धरातल पर स्थित।
- भाषाई,सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक प्रणाली के स्तर पर विविधता।
- लोकतंत्र एक स्वीकृत मूल्य।
- सुरक्षा के लिहाज से खतरे की अशंका वाला क्षेत्र।

@vidyadrishti

By - M H Rabbani

संघर्ष के कारण :-

(1) सीमा एवं नदी जल के बटवारे को लेकर विवाद।

(2) विद्रोह एवं जातीय संघर्ष

@vidyadrishti

(3) संसाधनों के बटवारे को लेकर संघर्ष

- इन वजहों से दक्षिण एशिया का इलाका बड़ा संवेदनशील है और अनेक विशेषज्ञों का मानना है कि आज विश्व में यह क्षेत्र सुरक्षा के लिहाज से खतरे की आशंका वाला क्षेत्र है।

दक्षिण एशिया के लोगों की राय :-

- दक्षिण एशिया के देश अगर आपस में सहयोग करें तो यह क्षेत्र विकास करके समृद्ध बन सकता है।

दक्षिण एशिया की समान समस्याएं / चुनौतियाँ

(1) राजनीतिक अस्थिरता

- दक्षिण एशियाई देशो की मुख्य समस्या राजनीतिक अस्थिरता है।
- इसके कारण इन देशो मे बार - बार राजनीतिक बदलाव और लोगो का ध्यान विकास से हट कर देश की राजनीति पर केंद्रित हो जाता है।

(2) शिक्षा एवं मानवविकास

- शिक्षा का प्रसार एवं मानव विकास संतोषजनक नहीं है।
- शिक्षा एवं मानवविकास की तुलना मे हथियारो पर अधिक खर्च।
- अत: आर्थिक विकास की गति रुक जाती है।

(3) परस्पर विश्वास का अभाव

- आपस में एक- दूसरे पर विश्वास न होने की वजह से अंतर्राष्ट्रीय मंच पर एक राय नहीं होती।
- जैसे- भारत और पाकिस्तान के बीच परस्पर शंका।

(4) अंतक्षेत्रीय व्यापार मे कमी

@vidyadrishti

- इन देशो के के बीच आपस मे व्यापार की मात्रा बहुत कम है।

(5) प्रशासनिक बाँधा

- दक्षिण एशिया के लगभग सभी देशो मे प्रशासनिक बाँधाएँ है जो इनके विकास के मार्ग में बाँधा है।

(6) आपसी संघर्ष

- सीमा एवं नदी जल के बटवारे को लेकर
- विद्रोह एवं जातीय संघर्ष
- संसाधनो के बटवारे को लेकर संघर्ष

(7) साझी समस्या

- आतंकवाद से दक्षिण एशिया के अधिकांश देश प्रभावित हैं।

प्रश्न : दक्षिण एशियाई देशों की समान समस्या का विश्लेषण करें।

प्रश्न : लोकतंत्र के मिले जुले रिकॉर्ड के बावजूद दक्षिण एशियाई देशों की जनता लोकतंत्र की एक जैसी आकांक्षा रखती है। कैसे ?

प्रश्न : "लोकतंत्र दक्षिण एशिया के लोगों की पहली पसंद बनता जा रहा है।" इस कथन को न्यायोचित ठहराइये।

प्रश्न : भिन्न भिन्न राजनीतीक प्रणाली होते हुए भी सम्पूर्ण दक्षिण एशिया में किस प्रकार लोकतंत्र एक स्वीकृत मानक बन गया ? व्यख्या कीजिए।

@vidyadrishti

By - M H Rabbani

दक्षिण एशिया में लोकतंत्र का मिला जुला इतिहास

दक्षिण एशिया मे लोकतंत्र का मिला-जुला इतिहास रहा है जिसे निम्नलिखित तथ्यों से समझा जा सकता है :-

(a) भारत एवं श्रीलंका मे विभिन्न कठिनाइयों के बावजूद लोकतंत्र कायम है।

(b) पाकिस्तान एवं बगलादेश के पास लोकतंत्र एवं सैनिक शासन दोनो का अनुभव है।

(C) नेपाल मे कुछ ही वर्ष पहले राजतंत्र की जगह लोकतंत्र स्थापित हुआ है।

(d) भुट्टान भी राजतंत्र से बहुदलीय लोकतंत्र में परिवर्तित।

(e) मालदीव सल्तनत शासन से गणतंत्र में परिवर्तित ल्ल @vidyadrishti

● निष्कर्ष :- वस्तुतः दक्षिण एशिया में लोकतंत्र के मिले जुले रिकॉर्ड के बावजूद यहाँ की जनता लोकतंत्र के लिए एक जैसी आकांक्षा रखती है।

लोकतंत्र दक्षिण एशिया की पहली पसंद

(1) भारत और श्रीलंका ने अपनी आजादी के बाद जनता की अकक्षाओं के अनुरूप लोकतन्त्र को अपनाया और लगातार यहाँ लोकतंत्र मजबूत हो रहा है।

(2) पाकिस्तान और बाँग्लादेश मे सैनिक शासन का बार - बार विरोध हुआ और अंततः ये लोकतांत्रिक देश बनें।

(3) नेपाल एव भूटान मे अनेक बार सावैधानिक राजतंत्र का विरोध हुआ और अंततः ये भी लोकतांत्रिक देश बने।

(4) दक्षिण एशिया मे कराए गए सर्वेक्षणो से पता चलता है कि यहाँ लोकतंत्र को भरपूर जन समर्थन प्राप्त है।

(5) दक्षिण एशिया के लोग किसी अन्य शासन प्रणाली की अपेक्षा प्रजातंत्र को महत्व देते है।

(6) इन देशो मे हर धर्म एवं वर्ग प्रतिनिधि मूलक लोकतंत्र का समर्थन करते हैं।

● निष्कर्ष :-

◆ वस्तुतः दक्षिण एशिया के देशो ने इस अवधारणा को गलत साबित कर दिया कि लोकतंत्र सिर्फ दुनिया के धनी देशो मे ही फल-फूल सकता है।

◆ अतः हम कह सकते है कि दक्षिण एशिया के अनुभवो से लोकतंत्र की वैश्विक कल्पना का दायरा बढ़ा है।

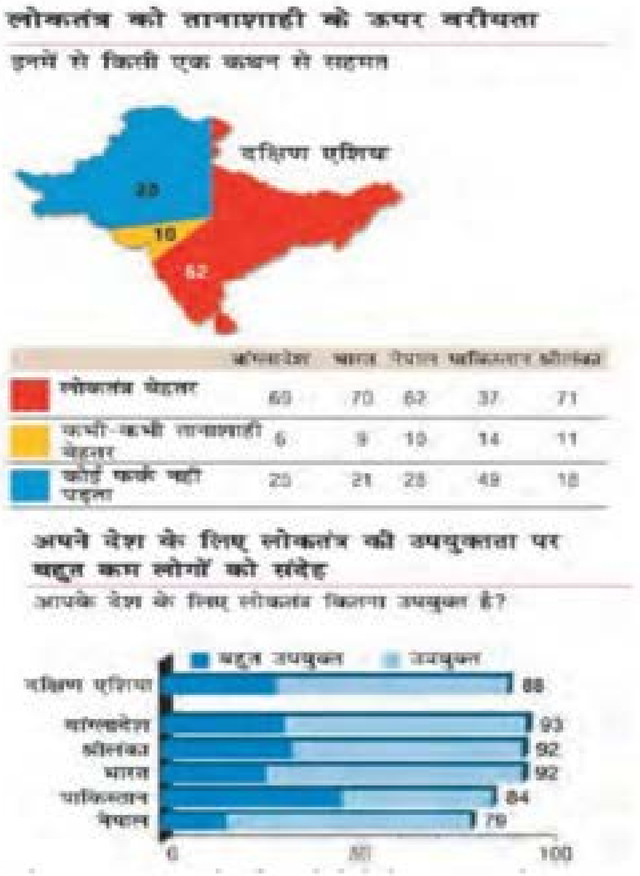

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By - M H Rabbani

दक्षेस या सार्क (SAARC)

👉 **स्थापना :-** बांग्लादेश के शासन अध्यक्ष जिया-उर रहमान के पहल पर 1985 मे हुई।

👉 **मुख्यालय :-** काठमांडू (नेपाल)

👉 1 से 2 अगस्त 1983 को नई दिल्ली में दक्षिण, एशिया के सात देशो के विदेश मंत्रियो की बैठक में कुछ मुद्दों पर सहमति बनी।

👉 दिसम्बर 1985 मे सार्क का पहला शिखर सम्मेलन हुआ जिसमें 8 दिसम्बर को सार्क का घोषणा पत्र स्वीकार कर लिया गया।

👉 **SAARC :-**
- South Asian Association For Regional Cooperation
- दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन

👉 **संस्थापक देश :-** 7 [भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान और मालदीव]

👉 पर्यवेक्षक देश :- 10

@vidyadrishti

👉 **वर्तमान सदस्य देश** - 8
- 2005 में अफ़ग़ानिस्तान शामिल

👉 **उद्घाटन भाषण :-** इस संगठन के उद्घाटन भाषण में भारत के प्रधानमंत्री (श्री राजीव गांधी) ने इसे "नए सवेरे" की शुरुआत बताया और कहा कि, "क्षेत्रीय सहयोग सामूहिक आत्मनिर्भरता का वह रास्ता दिखाता है जिस पर चलकर समूचे क्षेत्र में गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण और बीमारी की समस्याओं से पार पाया जा सकता है"।

सार्क के महत्वपूर्ण शिखर सम्मेलन

सार्क के सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों का सम्मेलन "शिखर सम्मेलन" कहलाता है।

👉 **पहला शिखर सम्मेलन**
- 1985 ढाका में हुआ, इसे स्थापना सम्मेलन भी कह सकते हैं।

👉 **7 वाँ शिखर सम्मेलन**
- 1993 में ढाका में हुआ ल्ल
- इसमें सदस्य राष्ट्रों ने आतंकवाद को खत्म करने के लिए लिए गए फैसलों को लागू करने की घोषणा की ल्ल
- दक्षिण एशियाई वरीयता व्यापार समझौते (South Asian Preferential Trade Agreement SAPTA) पर हस्ताक्षर हुआ।

👉 **12 वाँ शिखर सम्मेलन**
- 2004, इस्लामाबाद में हुआ।
- इसमें "मुक्त व्यापार समझौते " (South Asian Free Trade Agreement = SAFTA) पर हस्ताक्षर हुआ,जिसको 1 जनवरी 2006 से लागू करने का निश्चय किया गया।

👉 **14 वाँ शिखर सम्मेलन**
- पहली बार आठवें सदस्य अफगानिस्तान ने हिस्सा लिया।

👉 **18 वाँ शिखर सम्मेलन**
- काठमांडू,2014
- अंतिम सम्मेलन

By - M H Rabbani

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

👉 **19 वाँ सम्मेलन**

- 2016, पाकिस्तान में प्रस्तावित
- URI आतंकवादी हमला
- भारत का सम्मेलन में शामिल होने से इंकार, अत: नेपाल के अतिरिक्त सभी देशों ने स्वयं को सम्मेलन से अलग कर लिया।

@vidyadrishti

दक्षेस या सार्क के सिद्धांत

(1) आपसी मदभेद को भूलाकर राजनीतिक सहमति से सार्क को मजबूत बनाना ताकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस संगठन को महत्व मिले तथा इसकी आवाज सुनी जाए।

(2) सार्क के कार्यक्रमो के क्रियान्वयन पर आपसी मदभेद की छाया नहीं पड़नी चाहिए।

(3) द्विपक्षीय मदभेद को सार्क से दूर रखना।

(4) सार्क एक राजनीतिक संघ या मंच नही है। यह अपने सदस्य देशो की सम्प्रभुता, समानता, क्षेत्रीय अखंडता और राजनीतिक स्वतंत्रता का सम्मान करेगा।

सार्क द्वारा शांति एवं सहयोग

सार्क ने निम्न प्रकार से शांति एवं सहयोग स्थापित करने का प्रयास किया :-

(1) दक्षिण एशिया मे राजनीतिक स्थिरता स्थापित करके।

(2) दक्षिण एशिया के देशों के बीच परस्पर राजनीतिक एवं आर्थिक सहयोग स्थापित करके।

(3) द्विपक्षीय संबंधो मे सुधार करके।

(4) मित्रता,पारस्परिक सहयोग और शांति को बढावा देकर।

@vidyadrishti

सार्क के उद्देश्य

(1) सहयोग को बढ़ावा देना

- दक्षिण एशिया के देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना और एक- दूसरे के विकास में सहायता प्रदान करना।
- क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ सहयोग करना।

(2) लोगो का कल्याण

- दक्षिण एशिया के लोगो का कल्याण और जीवन की गुणवत्ता मे सुधार लाना।

(3) विकास

- आर्थिक,सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रो में आपसी सहयोग को बढ़ावा देना।

(4) सामूहिक आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास

- दक्षिण एशिया के देशों को सामूहिक रूप से आत्मनिर्भर बना कर उनमे सामूहिक आत्मविश्वास पैदा करना।

(5) समस्या का शांतिपूर्ण समाधान

- सार्क के विभिन्न देशो को प्रेरित करना कि वे आपसी समस्या का समाधान शांतिपूर्ण ढंग से करे।

(6) आपसी विश्वास और समझ बूझ को विकसित करना

- एक-दूसरे की समस्या के लिए आपसी विश्वास एवं समझ - बूझ को विकसित करना तथा अंतरर्राष्ट्रीय संबंधों को मजबूत करना।

By - M H Rabbani

@vidyadrishti

सार्क का महत्व / प्रभाव

(1) बाहरी शक्तियो के हस्ताक्षेप मे कमी

- सार्क के कारण बाहरी शक्तियो (देशों) का हस्ताक्षेप दक्षिण एशिया के देशों के अंतरिक मामलो मे कम हुआ है।

(2) व्यापार में वृद्धि

- SAFTA और SAPTA जैसे समझौतो के कारण दक्षिण एशिया के देशो के बीच आंतरिक व्यापार मे वृद्धि हुई है।

(3) सामान्य समस्याओ का हल

- सार्क के कारण दक्षिण एशिया के देश एक-दूसरे के समीप आए है जिससे सार्क कुछ सामान्य समस्याओ का हल करने मे सफल रहा है ।

(4) सार्क द्वारा शांति एवं सहयोग

प्रश्न : सार्क का दक्षिण एशियाई देशों पर प्रभाव या महत्व बताएं। @vidyadrishti

आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में सार्क की भूमिका

(क) मुक्त व्यापार समझौते के तहत भारत सहित अल्पविकसित देश (LDCs) बहुत-सी चीजों का आयात बिना किसी सीमा शुल्क के कर रहे हैं।

(ख) सार्क विकास निधि (SAARC Development Fund - SDF) की स्थापना 2005 में की गई थी। इस निधि के द्वारा दक्षेस देशों में कई क्षेत्रीय परियोजनाएँ चल रही हैं।

(ग) सार्क फूड बैंक (SAARC Food Bank) परियोजना ठीक से चल रही है। इसके द्वारा सदस्य देशों में खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित किया जाता है।

(घ) भारत ने भूटान में संचार तकनीक और स्वास्थ्य परियोजना को आगे बढ़ाने का काम किया है तथा श्रीलंका में वर्षा जल को एकत्रित करने और ग्रामीण क्षेत्रों में सूर्य ताप से बिजली प्रदान करने का कार्य जारी है।

(ङ) सार्क देशों के बीच व्यापार और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत बनाने में व्यापार , शिल्प प्रदर्शनी, लोकगीत समारोह और साहित्य समारोह का योगदान रहा है।

सार्क की स्थापना की आवश्यकता

सार्क या दक्षेस की स्थापना की जरूरत निम्न कारणो से महसूस की गई :-

(1) अमेरिका और सोवियत संघ जैसी महाशक्ति ने इस क्षेत्र के देशो को अपने - अपने प्रभाव मे रखने का प्रयास किया।

(2) हिन्द महासागर में इन बड़ी महाशक्तियो ने अपनी नौसैनिक गतिविधियाँ तेज कर दी और नौसैनिक अड्डे बनाए तो इस क्षेत्र के देशो को प्रदेशीक अखंडता का खतरा पैदा होने लगा।

(3) यह महसूस किया गया जाने लगा कि इस क्षेत्र के देशो मे आपसी एकता एवं सहयोग का विकास न हुआ तो ये देश धीरे - धीरे बाहरी शक्तियो के शोषण का शिकार बन जाएगे।

(4) यह भी महसूस किया गया कि आपसी सहयोग और सहायता से ये देश अपना विकास कर सकते हैं और वैश्विक पटल पर इनके प्रभाव में वृद्धि हो सकती है।

(5) अत: 1985 में सार्क की स्थापना की गई।

प्रश्न : दक्षेस की स्थापना की आवश्यकता क्यों महसूस की गयी ?

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

@vidyadrishti

By - M H Rabbani

दक्षेस क्षेत्रीय सहयोग के लिए विकास के क्षेत्र

- 1986 मे क्षेत्रीय सहयोग के लिए अस्थायी तौर पर विकास के नौ क्षेत्र निश्चित किए गए और इनके लिए संयोजक भी नियुक्त किए गए।
- ये विकास के क्षेत्र निम्नलिखित हैं :-

1. खेलकूद तथा संस्कृति
2. ऋतू विज्ञान
3. वैज्ञानिक तथा तकनीकी सहयोग

(1–3) — **संयोजक भारत**

4. दूर संचार
5. यातायात तकनीक

(4–5) — **संयोजक पाकिस्तान**

6. कृषि — **संयोजक बांग्लादेश**
7. डाक सेवाएं — **संयोजक भुट्टान**
8. स्वास्थ्य तथा जनसंख्या — **संयोजक नेपाल**
9. ग्रामीण विकास — **संयोजक श्रीलंका**

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
@vidyadrishti

सार्क की महत्वपूर्ण गतिविधियों में भारत की भूमिका

- सार्क का दूसरा सम्मेलन 1986 मे राजीव गाँधी की अध्यक्षता मे बेंगलुरु में हुई।
- 1992 मे दिल्ली मे सार्क के प्रथम सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
- पहली दक्षेस विदेश मंत्रियों की बैठक 1996 मे दिल्ली मे हुई।
- भारत मे सार्क व्यापार मेले का भी आयोजन किया जा चुका है।
- भारत नेपाल एवं भूटान के साथ मुक्त व्यापार करता है।
- भारत ने भूटान संचार तकनीक और स्वास्थ्य परियोजना को आगे बढ़ाने का काम किया है तथा श्रीलंका में वर्षा जल को एकत्रित करने और ग्रामीण क्षेत्रों में सूर्य ताप से बिजली प्रदान करने का कार्य जारी है।
- 2014 में हुए 18 वाँ शिखर सम्मेलन मे भारत ने सात देशो को तीन से पाँच साल का व्यापार बीजा देने की घोषणा की।

SAFTA

- South Asian free trade Agreement
  दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार समझौता
- सार्क के **12 वाँ शिखर सम्मेलन (पाकिस्तान) 2004** मे यह समझौता हुआ जिसे **2006 में लागु** किया गया।

उद्देश्य :-

(1) दक्षिण एशियाई देशो के लिए मुक्त व्यापारिक क्षेत्र का विकास करना।
(2) अंतरक्षेत्रीय व्यापार से व्यापारिक अवरोधको को समाप्त करना।

लाभ :-

- इस क्षेत्र में शांति एवं सहयोग को बढ़ावा मिला।
- सीमा शुल्क में कटौती से उपभोक्ता वस्तुओं की कीमत मे गिरावट।

सीमाएं :-

(1) भारत के प्रति छोटे देशो की अशंका।
- भारत SAFTA की आड़ मे दक्षिण एशिया के व्यापार पर नियंत्रण कर लेगा।
- इन देशो के सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था प्रभावित करेगा।

(2) दक्षिण एशिया के देशों के व्यापार पर अभी भी अमेरिका और चीन जैसे बाहरी शक्ति का प्रभाव है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By - M H Rabbani

SAFTA को लेकर छोटे छोटे देशों की चिंताएं

(1) प्रमुख चिंताएँ

- छोटे - छोटे देश साफटा को शक की नजर से देखते हैं। इनका मानना है कि भारत साफटा की आड लेकर उनके बाजार पर नियंत्रण करना चाहता है और
- व्यवासयिक उद्यम पर प्रभाव डालकर उनके राजनीतिक और सामाजिक जीवन में हस्ताक्षेप कर सकता है।

(2) भारत का स्पष्टीकरण / प्रतिक्रिया

- इससे दक्षिण एशिया के सभी देशो को फायदा होगा।
- मुक्त व्यापार बढने से राजनीतिक मसलो पर सहयोग ज्यादा आसानी से हो सकता है।
- भारत पहले से ही भूटान,नेपाल और श्रीलंका से द्विपक्षीय व्यापार समझौता कर चुका है।
- अतः छोटे छोटे देशो की साफटा SAFTA को लेकर संदेह व्यर्थ है।

(3) सुझाव

- छोटे - छोटे देशों की SAFTA को लेकर भय एवं आशंका को दूर किया जाना चाहिए।
- सभी सदस्य देशों के बीच सामूहिक आत्मविश्वास को बहाल किया जाना चाहिए।
- आपसी विवादों को बातचीत से हल किया जाना चाहिए।
- क्षेत्रीय सहयोग एवं आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। @vidyadrishti

प्रश्न : साफटा से क्या अभिप्राय है? इसका कोई लाभ तथा दो सीमाएँ बताएँ।

प्रश्न : दक्षिण एशिया मे शांति स्थापित करने मे SAFTA की क्या भूमिका रही है?

प्रश्न : दक्षिण एशिया के देशों के बीच आर्थिक सहयोग की राह तैयार करने मे दक्षेस की भूमिका और सीमाओ का मूल्यांकन करें।

Hints ═ दक्षेस की भूमिका : महत्व

दक्षेस की सीमाए : दक्षिण एशिया के समझ चुनौती + साफ्टा की सीमा

सार्क की कमजोरियाँ

(1) सार्क देशों के बीच आपसी विश्वास नहीं पनप रहा है।

(2) भारत-पाक की आपसी कटुता सार्क के विकास में बाधक है।

(3) आतंकवाद के मुद्दे को लेकर आपसी विवाद ।

(4) भारत के पड़ोसी देश इस बात को लेकर भयभीत हैं कि भारत के आर्थिक फैसले और राजनीतिक निर्णय उनके सामाजिक, राजनीतिक जीवन को प्रभावित कर सकते हैं।

सार्क की भूमिका को प्रभावी बनाने के सुझाव

(1) दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार संधि (SAFTA) को पूरी ईमानदारी से लागू किया जाए।

(2) सेवा क्षेत्र (शिक्षा, कला चिकित्सा तकनीक) में आदान प्रदान को उदार बनाया जाए।

(3) व्यापारियों और पर्यटकों को दीर्घकालीन बहुउद्देश्य बोजा देना चाहिए।

(4) सार्क देशों के व्यापारिक जहाजों को एक दूसरे के बंदरगाहों पर प्राथमिकता के साथ सुविधाएँ प्रदान करना।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By - M H Rabbani

SAPTA

- South Asian Preferential Trade Agreement, **1996**
  दक्षिण एशिया अधिमानिक व्यापार समझौता

@vidyadrishti

👉 **उद्देश्य :-**
- आपसी व्यापार पर से मात्रात्मक एवं गुणात्मक प्रतिबंध को हटाना।

👉 **लाभ :-**
- व्यापार मे वृद्धि
- सदस्य देशों के बीच आर्थिक सहयोग मे वृद्धि

प्रश्न : दक्षिण एशिया की बेहतरी मे दक्षेस (सार्क) ज्यादा बड़ी भूमिका निभा सके इसके लिए आप क्या सुझाव देंगे ?

Hint ➖ SAFTA से संबंधित सुझाव + सार्क से संबंधित सुझाव

प्रश्न : दक्षिण एशिया के देश एक-दूसरे पर अविश्वास करते हैं। इससे अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर यह क्षेत्र एकजुट होकर अपना प्रभाव नहीं जमा पाता। इस कथन की पुष्टि में कोई भी दो उदाहरण दीजिए और दक्षिण एशिया को मजबूत बनाने के लिए उपाय सुझाइए।

Hint ➖ भारत और पाक के बीच संदेह *

प्रश्न : दक्षिण एशिया के देश भारत को एक बाहुबली समझते हैं जो इस क्षेत्र के छोटे देशों पर अपना दबदबा जमाना चाहता है और उनके अंदरूनी मामलों में दखल देता है। इन देशों की ऐसी सोच के लिए कौन-कौन सी बातें ज़िम्मेदार हैं ?

दक्षिण एशिया मे द्वीपक्षीय संबंधों पर बाहरी शक्तियों का प्रभाव

दक्षिण एशिया में द्विपक्षीय संबंधों को बाहरी शक्तियाँ इसप्रकार से प्रभावित करती हैं :-

(i) शीतयुद्ध के बाद दक्षिण एशिया में अमरीका के प्रभाव में वृद्धि हुई है। अमरीका ने शीतयुद्ध के बाद भारत और पाकिस्तान से अपने संबंधों में सुधार किया है।

(ii) अमरीका भारत-पाक के मध्य लगातार मध्यस्थ की भूमिका निभा रहा है।

(iii) दोनों देशों द्वारा आर्थिक सुधार करने और उदारीकरण की नीति अपनाने के परिणामस्वरूप अमरीका की दक्षिण एशिया में भागीदारी में वृद्धि हुई है।

(iv) अमरीका में दक्षिण एशियाई मूल के लोगों को काफी संख्या होने के कारण तथा इस क्षेत्र की जनसंख्या और बाजार के बड़े आकार के कारण अमरीका का हित इस क्षेत्र में सुरक्षा और शांति स्थापित करने से जुड़ा है।

(vi) वैश्वीकरण और विकास के कारण भारत और चीन एक दूसरे के निकट आए हैं और 1991 के पश्चात् इनके संबंध सुदृढ़ हुए हैं।

भुट्टान मे राजनीतिक बदलाव की प्रक्रिया

- 2008 मे राजतंत्र से संवैधानिक राजतंत्र बना।
- राजा के नेतृत्व मे बहुदलीय लोकतंत्र को अपनाया गया।

By - M H Rabbani

भारत और भुट्टान संबंध

- संबंध बेहतर है कोई बहुत बडा विवाद नहीं।
- **1949 भारत - भुट्टान मैत्री संधि** के अनुसार भुट्टान की विदेश नीति के निर्धारण मे भारत सलाह दे सकता है।
- भूटान को UNO का सदस्य बनाने मे भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है।
- भारत की सहायता से भूटान मे कई सारी परियोजना चल रही है।

1. चुखापन बिजली परियोजना
2. थिम्पु अस्पताल परियोजना
3. पूर्वी ग्रीड ट्रांसमिशन लाइन

- **भारत भूटान की कई पनबिजली परियोजनाओं और विकास कार्यों मे सहायता कर रहा है।**
- भूटान को सबसे ज्यादा अनुदान भारत से प्राप्त होता है।
- **भुट्टान द्वारा पूर्वोत्तर भारत के उग्रवादियों और गुड़िल्लों को अपने क्षेत्र से निकालने के कारण भारत को सहायता मिली है l**

मालदीव मे राजनीतिक बदलाव की प्रक्रिया

- मालदीव 1968 तक सल्तनत हुआ करता था।
- 1968 में यह एक गणतंत्र बना और शासन की अध्यक्षात्मक प्रणाली अपनाई गई।
- 2005 से बहुदलीय व्यवस्था वाली संसदीय प्रणाली को अपनाया।
- प्रमुख राजनीतिक दल मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी (एम.डी.पी) का देश के राजनीतिक मामलों में प्रभुत्व है।
- 2005 के चुनावों के पश्चात् मालदीव में लोकतंत्र मजबूत हुआ है क्योंकि इस चुनाव में विपक्षी दलों को कानूनी मान्यता दे दी गई।

भारत और मालदीव संबंध

- बेहतर संबंध, ब्रिटिश काल मे मालदीव की सुरक्षा की जिम्मेदारी भारत की थी।
- 1988 मे श्रीलंका से आए भाड़े के तमिल सैनिकों द्वारा मालदीव पर आक्रमण के समय भारतीय वायु सेना और नौसेना द्वारा कार्रवाई की गई।
- इसप्रकार 1988 की आतंकवादी (उग्रवादी) समूह द्वारा अब्दुल गयूम की इस तख्तापलट के प्रयास को भारतीय सेना द्वारा नाकाम कर दिया गया।
- भारत की ओर से इंदिरा गाँधी स्मृति अस्पताल उपहार मे दिया गया।
- भारत सरकार मालदीव के आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास, प्रयटन और मत्स्य उद्योग मे मदद करता है।

प्रश्न : दक्षिण एशिया के दो छोटे - छोटे देश भुट्टान एवं मालदीव मे राजनीतिक बदलाव की प्रक्रिया को स्पष्ट करें।

प्रश्न : दक्षस का विस्तृत रूप लिखिए। इसके किन्ही तीन विशेषताओं को सुचिबद्ध कीजिए।

प्रश्न : भारत के प्रधानमंत्री को चीन यात्रा पर जाना है और आपको उनके लिए एक संक्षिप्त विवरण तैयार करने के लिए कहा गया है। सीमा विवाद और आर्थिक सहयोग के विषय पर भारतीय और चीनी स्थिति का एक एक विचार लिखिए।

उत्तर- ● भारत के दृष्टिकोब से विचार

(i) चीन द्वारा संपूर्ण अरुणाचल प्रदेश को भारत का अभिन्न अंग स्वीकार करना चाहिए।

(ii) दोनों देशों में सीमा पर और अधिक व्यापार केन्द्र खोलने चाहिए ताकि व्यापार में वृद्धि हो सके।

● चीन के दृष्टिकोण से विचार

(i) भारत द्वारा अक्साई चिन क्षेत्र पर अपना दावा नहीं करना चाहिए।

(ii) भारतीय अर्थव्यवस्था के अंतर्गत चीनी निवेश के लिए और अधिक क्षेत्र खोले जाने चाहिए ताकि चीनी निवेश मे वृद्धि हो सके।

दक्षेस (सार्क) तथा यूरोपीय संघ वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप मे अन्तर

यूरोपीय संघ एक महत्त्वपूर्ण प्रभावी संगठन है। इसके लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं -

(i) यूरोपीय संघ का अपना झंडा गान स्थापना दिवस और मुद्रा है।

(ii) यूरोपीय संघ की साझी विदेश और सुरक्षा नीति है।

(iii) 2005 में यूरोपीय संघ की अर्थव्यवस्था विश्व में सबसे बड़ी थी। इसका सकल घरेलू उत्पादन 12,000 अरब डालर से अधिक था। यह उत्पादन अमरीका में भी अधिक था।

(iv) विश्व व्यापार में इसका भाग अमरीका से तीन गुणा ज्यादा है।

(v) यूरोपीय संघ का एक सदस्य देश प्रान्त सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य है।

(vi) सैनिक शक्ति के रूप में यूरोपीय संघ के पास विश्व को दूसरी सबसे बड़ी होना है।

(vii) यूरोपीय संघ के सदस्य देश फ्रांस के पास परमाणु हथियार है।

(viii) अंतरिक्ष विज्ञान और संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी यूरोपीय संघ का विश्व में दूसरा स्थान है।

👉 दूसरी तरफ दक्षिण एशिया के देशों के बीच आर्थिक सहयोग की यह तैयार करने में दक्षेस ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

👉 यद्यपि दक्षेस को अधिक सफलता प्राप्त नहीं हुई परंतु फिर भी दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र समझौते (SAFTA) होने के परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में शांति और सहयोग में वृद्धि हुई है। इस समझौते के अनुसार इन देशों के बीच आपसी व्यापार में लगने वाले सीमा शुल्क को 2007 तक बीस प्रतिशत कम करना सम्मिलित था।

👉 दक्षेस द्वारा दक्षिण एशिया की बेहतरी के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए आवश्यक है कि यह यूरोपीय संघ की तरह एक विशाल राष्ट्र-राज्य की तरह काम करे जिसमें इसका अपना झंडा गान स्थापना दिवस और अपनी मुद्रा हो।

👉 सभी देश यूरोपीय संघ की तरह आपस में सीमा नियंत्रण समाप्त करके एक एकीकृत बाजार का गठन करें। ऐसी परिस्थितियों में दक्षिण एशिया में दक्षेस महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल होगा तथा यह एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय संगठन बनकर उभरेगा।

भारत श्रीलंका की समान विशेषताएं

(1) दोनो इंग्लैंड के उपनिवेश रहे।

(2) द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 1947 और 1948 मे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाया।

(3) भाषायी, धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता।

(4) गुटनिरपेक्ष नीति के समर्थक।

विद्या दृष्टि

श्रीलंका मे जातीय संघर्ष

🔹 सिंहली और तमील समुदाय के बीच जातीय संघर्ष के निम्न कारण थें :-

(1) श्रीलंका सरकार की तमीलों के प्रति उपेक्षा एवं भेदभाव की नीति।

(2) बहुसंख्यक सिंहलियो का मानना है कि श्रीलंका सिर्फ उनका है अत: अल्पसख्यक तमिलो को कोई विशेष अधिकार नही मिलना चाहिए।

(3) श्रीलंका की राजनीति एवं अन्य क्षेत्रो मे बहुसंख्यक सिंहली समुदाय का दबदबा।

(4) बहुसंख्यक सिहली समुदाय द्वारा अपनी भाषा, सस्कृति, धर्म को तमिलों पर थोपने का प्रयास।

@vidyadrishti

(5) लिट्टे की भूमिका

- 1983 से उग्र तमिल संगठन लिट्टे (लिबरेशन टाईगर ऑफ तमिल ईलम) श्रीलंकाई सेना के साथ तमिलो के अधिकार के लिए लगातार संघर्ष कर रही थी।
- श्रीलंका (सिलोन) उत्तर पूर्वी हिस्सो पर नियंत्रण कर तमिलो के लिए एक अलग देश तमिल इल्म बनाने की माँग कर रहे थे।

श्रीलंका मे तमीलों की माँग

(1) उत्तर पूर्वी क्षेत्र को अलग कर एक अलग देश तमिल इल्म की माँग।

(2) राजनीनिक एवं संवैधानिक संस्थाओं मे तमिलों का प्रतिनिधतव सुनिश्चित किया जाए।

भारत - श्रीलंका समझौता

LTTE नामक उग्रवादी तमिल संगठन की बढ़ती हुई सशस्त्र विद्रोही कार्यवाही से तंग आकर **श्रीलंका के राष्ट्रपति जयवर्द्धने ने भारत के प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के साथ 29 जुलाई 1987 को एक समझौता** किया। इसमे तय किया गया कि :-

(1) श्रीलंका का विभाजन नहीं होने दिया जाएगा।

(2) तमिल बहुल उत्तरी और पूर्वी प्रांतो मे 1988 तक जनमत संग्रह कराया जाएगा और यदि वे विलय के पक्ष मे हुए तो दोनो प्रांतो को मिलाकर एक नया प्रांत बना दिया जाएगा।

(3) यदि परिणाम विलय के विरुद्ध हुआ तो दोनो प्रांतो का अलग अलग अस्तित्व बना रहेगा।

(4) इन दोनो प्रांतों को स्वायतता दी जाएगी , इनका अपना राज्यपाल और मुख्यमंत्री होगा।

(5) यदि तमिल उग्रवादियो ने इस समझौते को मंजूर करके हथियार न डाले तो उन पर काबू पाने के लिए श्रीलंका सरकार भारतीय सेना को बुलायेगी अथार्थ मदद लेगी।

भारत - की शांति सेना

- तमिलो की समस्या भारत वंशी लोगो की समस्या थी, इसलिए 1987 मे तमिलो के हितो की रक्षा के लिए भारत और श्रीलंका के बीच समझौता हुआ।
- इस समझौते के तहत श्रीलंका सरकार और तमिली के बीच तनाव को कम करने के लिए भारत ने श्रीलंका मे अपनी शांति सेना भेजी।
- शांति सेना का वापस बुलाया जाना :-

(1) शांति सेना लिट्टे के साथ संघर्ष मे उलझ गयी।

(2) श्रीलंका की जनता ने इसे आंतरिक मामलो मे हस्ताक्षेप माना और शांति सेना का विरोध किया।

(3) 1989 मे शांति सेना नाकामी के साथ वापस बुला ली गई।

श्रीलंका मे शांति

- श्रीलंका मे जातीय संघर्ष का हिंसक चरित्र लंबे समय तक कायम रहा।
- नार्वे और आइसलैंड जैसे स्कैनेडेवियन देश संघर्ष को बातचीत से खत्म करने का प्रयास कर रहे हैं। श्रीलंका का भविष्य इन्ही वार्ताओ पर निर्भर करता है।
- 2009 मे लिट्टे के खात्मे के बाद अब स्थिति बहुत हद तक श्रीलंका सरकार के नियंत्रण मे है।

श्रीलंका की आर्थिक संवृद्धि और मानवविकास

- लगातार कई वर्षो तक जातीय संघर्ष के बावजूद भी श्रीलंका ने अच्छी आर्थिक वृद्धि और विकास के उच्च स्तर को हासिल किया है।
- जनसंख्या वृद्धि पर वृद्धि पर सफलतापूर्वक नियंत्रण।
- दक्षिण एशिया मे सबसे पहले उदारीकरण प्रति व्यक्ति GDP मे दक्षिण एशिया दक्षिण एशिया मे सबसे अधिक है।
- मानव विकास सूचकांक (HDI) मे दक्षिण एशिया मे सबसे बेहतर प्रदर्शन।
- लम्बे तनाव एवं संघर्ष के बावजूद लोकतंत्र कायम है।

भारत श्रीलंका संबंध

- ब्रिटिश उपनिवेश रहे पुराने दोनों देशों के संबंध लगभग 200 वर्ष पुराने हैं।
- आजादी के बाद संबंधो मे बहुत परिवर्तन आया और संबंध सुधरे है परंतु फिर भी कुछ मुद्दे पर विवाद है।

👉 **भारत श्रीलंका विवाद के बिंदु :-**

(1) श्रीलंका मे भारतीय वंशजों की समस्या

- 1949 नागरिता अधिनियम के तहत बहुत सारे भारतीय मूल के तमिलो को नागरिकता नहीं मिली उन्हे भारत जाने को आदेश दिया गया।

(2) तमिल समस्या

(3) तमिल शरणार्थी समस्या 1990 के बाद

👉 **भारत और श्रीलंका के बीच सहयोग के बिंदु :-**

by - M H Rabbani

(1) कच्चा तिबू द्वीप

- 1974 मे समझौता।
- श्रीलंका को दे दिया गया।

(2) संयुक्त आयोग की स्थापना, 1991

- व्यापार , आर्थिक और तकनीक के क्षेत्र मे सहयोग

(3) द्विपक्षीय व्यापार समझौता

- चंद्रिका कुमार तुंग और वाजपेयी
- दिसम्बर 1998

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

@vidyadrishti

(4) सहयोग के लिए समझौता

- 15 वा सार्क सम्मेलन में डा0 मनमोहन सिंह और महिंद्रा राजपक्षे के बीच

(5) सुरक्षा एवं विकास से संबंधित समझौता

- नरेंद्र मोदी और श्रीलंका के राष्ट्रध्यक्ष के बीच।

प्रश्न : जातीय संघर्ष के बावजूद श्रीलंका की उच्च आर्थिक संवृद्धि का मूल्यांकन करे।

यहाँ दो चित्र दिए गए हैं। पहले चित्र में लोकतंत्र समर्थक दुर्गा थापा को लोकतंत्र बहाली की एक रैली (काठमांडू, 1990) में भाग लेते हुए दिखाया गया है। दूसरी तस्वीर 2006 की है। इसमें भी दुर्गा थापा को दिखाया गया है लेकिन इस बार वे लोकतंत्र बहाली के दूसरे आंदोलन की सफलता का उत्सव मना रही हैं।

कार्टून

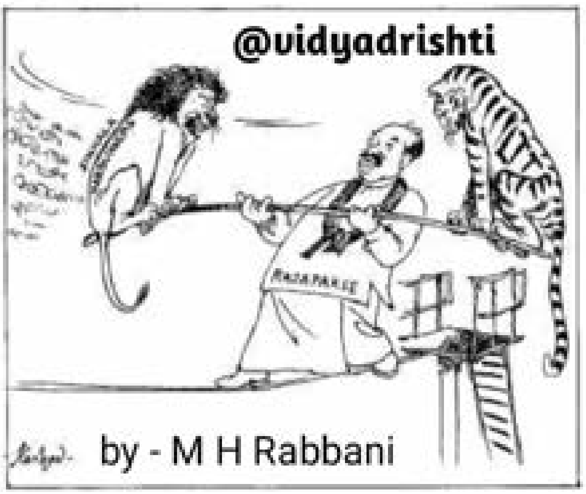

- शेर - सिंहली कटटरपंथी, बाघ - तमिल उग्रवादी
- यह कार्टून श्रीलंका की सरकार के सामने मौजूद दुविधा को दर्शाता है।
- गृहयुद्ध समाप्त करने का श्रीलंका की सरकार द्वारा प्रयास।
- राजपक्षे को दोनों समुदायों के बीच संतुलन साधते दिखाया गया है।
- राजपक्षे [2005-2015,2019- वर्तमान]

नेपाल मे लोकतंत्र की स्थापना

प्राचीन काल से नेपाल एक हिन्दू बहुल राजतंत्र रहा है। राजतंत्र से संवैधानिक राजतंत्र और अंततः गणतंत्र बनने की प्रक्रिया को निम्न तथ्यो के माध्यम से समझा जा सकता है :-

(1) 1950 - 1990 तक का काल

- सबसे पहले 1959 मे नेपाल मे लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना की गई थी।
- परन्तु नेपाल नरेश महेंद्र ने 1962 में लोकतात्रिक व्यवस्था को समाप्त कर शासन पर अपना पुनः नियंत्रण कर लिया।

(2) 1990 - 2006 जातक का काल

- छात्र संगठनो, श्रम संगठनो एवं राजनीतिक दल के विरोध के दबाव मे 1990 के आस-पास लोकतांत्रिक सरकार की माँग को राजा ने स्वीकार लिया लेकिन लोकतांत्रिक सरकारों का कार्यकाल बहुत छोटा और समस्या भरा रहा ल
- इसी समय माओवादियो ने राजतंत्र के विरुद्ध सशास्त्र विद्रोह शुरू कर दिया इस प्रकार यह राजा, लोकतंत्र समर्थक और माओवादियो के बीच सत्ता के लिए **त्रिकोणीय संघर्ष** बन गया।
- 2002 मे राजा ने आंतरिक विद्रोह के नाम पर संसद भंग कर, पुनः निरंकुश राजतंत्रं लागू कर दिया ल
- इसी बीच नेपाल के राजा विरेंद्र और पूरे परिवार की हत्या हो गई। उत्तराधिकारी न होने के कारण उनके भाई ज्ञानेंद्र राजा बने ज्ञानेद्र ने भी दमन की नीति को जारी रखा ल

(3) 2006 मे

- ज्ञानेद्र के विरुद्ध लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शन और जनविद्रोह बहुत तेज हो गया।
- तत्कालीन राजा, ज्ञानेद्र को पुनः संसद बहाल करना पड़ा और गिरिजा प्रसाद कोइराला प्रधानमंत्री बनें ल

(4) 2006 के बाद

- 2006 तक नेपाल एक सवैधानिक राजतंत्र बना रहा लेकिन इसके बाद नेपाल मे व्यापक जनविद्रोह होने लगे, लोगों में अधिकारो के प्रति जागरुकता बढ़ी संविधान निर्माण की मांगे उठने लगी।
- विरोध का नेतृत्व सात दलो का गठबंधन (Seven party Alliance), सामाजिक कार्यकर्ता और माओवादियों द्वारा किया गया।

(5) संविधान निर्माण

- नेपाल के सात राजनैतिक दलो ने मिल कर संविधान की रचना की और लगभग 240 वर्षों से चले आ रहे राजतंत्र को समाप्त कर 28 मई 2008 को नेपाल को गणतंत्र घोषित किया गया।
- 2015 मे नेपाल के संविधान को अंगीकृत कर एक धर्मनिरपेक्ष संसदीय लोकतंत्र को अपनाया गया।

@vidyadrishti

निष्कर्ष :-

- नेपाल मे संसदीया लोकतंत्र की स्थापना एक लंबे संघर्ष का परिणाम है।
- वर्तमान मे नेपाल मे लोकतंत्र स्थापित है परन्तु विभिन्न सामाजिक समूह के बीच अपने हितो को लेकर तनाव है।

प्रश्न : नेपाल के लोगा अपने देश मे लोकतंत्र को बहाल करने मे कैसे सफल हुए ?

नेपाल मे संघर्ष के कारण

(1) 1990 के दशक मे सत्ता पर नियंत्रण के लिए त्रिकोणीय संघर्ष।
(2) 1990 के दशक मे ही लोकतान्त्रिक सरकार एवं संसद को बहाल करने को लेकर संघर्ष।
(3) 2006 के बाद संविधान निर्माण को लेकर संघर्ष।
(4) 2015 के बाद संविधान के कुछ प्रावधानों पर असहमति को लेकर संघर्ष।

भारत - नेपाल पारस्परिक संबंध

- भारत-नेपाल संबंध, कुल मिला कर मैत्री पूर्ण रहे हैं परन्तु माओवादी और कुछ राजनीतिक समूह का संबंध पर नकारात्मक प्रभाव रहा है।
- मद्देशी के अधिकारो की रक्षा एवं सरकार मे उनकी भूमिका को लेकर भारत के हस्ताक्षेप से तनाव।
- नेपाल - चीन मे मित्रता बढ़ने से तनाव।

1. 1996 मे महाकाल नदी संधि।
2. बिना पासपोर्ट एवं बीजा अवागमन की अनुमति।
3. नेपाली मूल मे के लोगो को भारतीय सरकारी सेवा मे काम।
4. मुक्त व्यापार समझौता।
5. व्यापार, आपदा प्रबंधन, जल प्रबंधन, बिजली उत्पादन, वैज्ञानिक क्षेत्र मे सहयोग।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

भारत - नेपाल विशिष्ट संबंध :-

- नेपाल भारत का पड़ोसी राष्ट्र है। यह एक पहाड़ी राष्ट्र है। नेपाल और भारत धर्म, संस्कृति, परंपराओं तथा भौगोलिक दृष्टि से एक दूसरे से बहुत नजदीक हैं।
- नेपाल की अर्थव्यवस्था काफी हद तक भारत पर निर्भर है। दोनों देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय सीमा खुली हुई है। एक-दूसरे देश में आने जाने पर कोई रोक नहीं है।
- कश्मीर मुद्दे पर नेपाल हमेशा भारत का साथ देता है। भारत आर्थिक क्षेत्र में नेपाल की बहुत मदद करता है।
- भारत के प्रधानमंत्री अक्सर नेपाल यात्रा पर जाते हैं तथा नेपाल के प्रमुख भारत की यात्रा पर आते रहते हैं।
- भारत और नेपाल के बीच बहुत-सी बहुउद्देशीय परियोजनाएँ चल रही हैं।

पाकिस्तान की स्थापना के लिए निर्णायक घटनाएं

1940 के दशक मे कुछ ऐसी राजनीतिक घटनाएँ हुई जिनके कारण भारत से एक अलग नया राष्ट्र पाकिस्तान का जन्म हुआ।

(1) कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच सत्ता के साझेदारी को लेकर मतभेद।

(2) मुस्लिम लीग के द्वारा संप्रदायिक चुनाव प्रणाली अर्थात पृथक निर्वाचक मंडल की माँग।

(3) जिन्ना का द्विराष्ट्रवाद का सिद्धांत।

(4) ब्रिटेन सरकार की नकारात्मक भूमिका।

@vidyadrishti

पाकिस्तान मे लोकतंत्र की अस्थिरता के कारण

(1) सेना, धर्मगुरु एवं भूस्वामीयों का दबदवा

- यहाँ सेना, धर्मगुरु एवं भूस्वामियो का सामाजिक दबदबा रहा है।
- इन्होंने कई बार लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार को गिराकर सैनिक शासन कायम करने मे सहायता दी है।

(2) भारत-पाकिस्तान तनावपूर्ण संबंध

@vidyadrishti

- भारत पाकिस्तान का संबंध हमेशा तनावपूर्ण रहा है।
- इसका फायदा उठाकर यहाँ के सेना अध्यक्ष और धर्मगुरू लोकतांत्रिक सरकार मे कमियाँ दिखाकर जनता को यह विश्वास दिलाते है कि पाकिस्तान की सुरक्षा खतरे मे और और इसप्रकार सत्ता पर काबीज हो जाते हैं।

(3) अंतर्राष्ट्रीय समर्थन का अभाव

- अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी देशो के अपने द्वारा फायदे के लिए सैनिक शासन को बढ़ावा दिया गया।
- विभिन्न पाकिस्तानी संगठनो द्वारा भी सैनिक शासन को बढ़ावा दिया जाता है।

🔴 **निष्कर्ष :-**

👉 कटटरवादिता और समय- समय पर विभिन्न सैन्य अध्यक्षो के हस्तक्षेप ने पाकिस्तान मे लोकतंत्र के स्थायित्व मे बाधा डाला है।

👉 **यही कारण है कि पाकिस्तान मे लोकतांत्रिकरण प्रक्रिया को असफल माना जाता है जबकि उपरोक्त समस्याओं के न होने के कारण भारत मे लोकतंत्र की जड़े बहुत मजबूत टिकाऊ और अधिक सफल रही है।**

पाकिस्तान मे लोकतंत्र समर्थक कारक

(1) स्वतंत्र एवं साहसी प्रेस

- पाकिस्तान मे एक स्वतंत्र साहसी प्रेस है जिसने हमेशा लोकतंत्र एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत बनाने की हिमायत / पहल की है।

(2) मानवाधिकार आंदोलन

- पाकिस्तान मे मानवाधिकार आंदोलन के माध्यम से सैनिक शासन का विरोध एव लोकतंत्र का समर्थन किया जाता रहा है।

@vidyadrishti

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

by - M H Rabbani

पाकिस्तान पश्चिमी हितों का रखवाला

- अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी देशो को विश्वव्यापी इस्लामी आतंकवाद से डर लगता है।
- इन देशों को यह डर सताता है कि पाकिस्तान के परमाणिवक हथियार कही आतंकवादी समूह के हाथ मे लग जाए और आतंकवादी संगठन इनका प्रयोग इनके खिलाफ न कर ले।
- ऐसी परिस्थिति मे ये लोकतंत्र की अपेक्षा किसी सैनिक तानाशाह को पाकिस्तान मे बिठाकर सुरक्षा को लेकर अधिक आश्वस्त होना चाहते हैं।
- इसलिए पाकिस्तान को पश्चिमी हितो का रखवाला कहा जाता है।

प्रश्न : भारत की भाँति पाकिस्तान मे लोकतंत्र की जडे मजबूत क्यों न हो सकी जबकि दोनो देशो का इतिहास एक जैसा है।

प्रश्न : पाकिस्तान मे स्थायी लोकतंत्र के निर्माण की असफलता के लिए उत्तरदायी कारको की व्याख्या करे।

प्रश्न : पाकिस्तान मे लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया मे उत्पन्न बाधाओ का उल्लेख करे।

पाकिस्तान मे लोकतंत्र की कार्यप्रणाली

(1) जनरल अयूब खान

- पाकिस्तान निर्माण के बाद जनरल अयूब खान के नेतृत्व मे संविधान निर्माण का काम शुरू हुआ।
- अयूब खान ने खुद को ही देश का प्रमुख निर्वाचित घोषित कर दिया।
- जनता ने इसका विरोध किया और उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ा।

(2) जनरल याहया खान

- पुन: सैनिक शासन की स्थापना।
- बाँग्लादेश संकट,स्वतंत्र देश के रूप मे बांग्लादेश का निर्माण।
- पश्चिमी पाकिस्तान मे याहया खान का विरोध।

@vidyadrishti

by - M H Rabbani

(3) जुल्फेकार अली भुट्टो

- निर्वाचित सरकार 1971 - 77 तक

(4) जनरल जियाउल हक

- लोकतान्त्रिक रूप से निर्वाचित सरकार को गिराकर पुनः सैनिक शासन।
- विरोध मे लोकतंत्र समर्थन आंदोलन।

(5) बेनजीर भुट्टो

- 1988 मे लोकतान्त्रिक सरकार
- 1988 - 99 तक पाकिस्तान पिपल्स पार्टी और मुस्लिम लीग के बीच लोकतान्त्रिक सरकारे।

(6) जनरल परवेज मुशर्रफ

- 1999 मे प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को पद से हटाकर सैन्य शासन।
- 2001 मे अपने शासन को वैध ठहराने के लिए खुद को राष्ट्रपति के रूप मे निर्वाचित कर लिया।

(7) 2008 के बाद

- लोकतान्त्रिक सरकारें
- वर्तमान मे इमरान खान के नेतृत्व मे लोकतान्त्रिक सरकार।

● निष्कर्ष :- वस्तुतः बार - बार जनविरोध के कारण लोकतान्त्रिक प्रक्रिया को अपनाना पड़ा।

@vidyadrishti by - M H Rabbani

प्रश्न : पाकिस्तान मे लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट करे।

प्रश्न : पाकिस्तान मे लोकतंत्र की कार्यप्रणाली का विश्लेषण करें।

भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद के बिंदु

(1) कश्मीर समस्या

- 1947-48 के युद्ध मे कश्मीर के दो हिस्से हो गये एक पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (Pok) कहलाया जबकि दूसरा हिस्सा भारत का जम्मू कश्मीर प्रांत बना।
- 1965 और 1999 के युद्ध के बावजूद भी इसका समाधान न हो सका सका।
- दोनो देश सम्पूर्ण जम्मू कश्मीर को अपना बताते हैं।

(2) सामरिक मुद्दे

@vidyadrishti

- सियाचीन ग्लेशियर पर नियंत्रण और हथियारों की होड़ को लेकर तनाव।
- एक दूसरे को नष्ट करने के लिए पर्याप्त परमाणु हथियार एवं मिसाइल।
- 1998 मे भारत द्वारा पोखरण मे जबकि पाकिस्तान द्वारा चगाई पहाड़ी पर परमाणु परीक्षण किया गया। इससे सीधे एवं सर्वव्यापी युद्ध छिड़ने की आशंका कम हो गई है ।

(3) एक-दूसरे पर संदेह

- दोनो सरकारे एक दूसरे की गतिविधियो को संदेह की नजर से देखती है।

🔴 **भारत का मानना है कि :**

👉 पाकिस्तान कश्मीरी उग्रवादियो को हथियार, प्रशिक्षण और धन् देता है। भारत पर आतंकवादी हमले के लिए उन्हें सुरक्षा प्रदान करता है।

👉 खालिस्तान समर्थक उग्रवादियो को भी धन, हथियार और गोला बारूद उपलब्ध कराता है।

👉 पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी इंटर सर्विसेज इंटेलिजेस (ISI) बांग्लादेश और नेपाल के गुप्त ठिकानो से पूर्वोत्तर भारत मे भारत विरोधी अभियानो को बढावा देती है।

🔴 पाकिस्तान भी भारत की खुफिया एजेंसी (RAW) और भारत सरकार पर सिंध और बलुचिस्तान मे अलगाववादी आंदोलन को भड़काने का आरोप लगाती है।

(4) बॉंग्लादेश निर्माण

- भारत द्वारा पूर्वी पाकिस्तान का भौतिक एवं नैतिक समर्थन किया गया।
- बंगलादेश की आजादी मे भारत की भूमिका।

(5) सिधु नदी जल विवाद

(6) कच्छ के रन मे सरक्रीक सीमारेखा को लेकर विवाद I

(7) कारगील युद्ध 1998,अटल बिहारी वाजपेयी

by - M H Rabbani

(8) आतंकवाद

भारत और पाकिस्तान के बीच समझौता

1. कराची समझौता 1949
2. लियाकत नेहरू पैक्ट 1950
3. सिधु नदी जल समझौता 1960
4. ताशकंद समझौता 1965
5. शिमला समझौता 1972
6. दिल्ली समझौता 1973
7. सलाल पनबिजली परियोजना समझौता 1978
8. लाहौर घोषणा 1999
9. आगरा समझौता 2001

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
by - M H Rabbani

सिंधु नदी जल समझौता

- भारत पाकिस्तान के बीच सिधु नदी के जल के बाटवारे को लेकर समझौता k
- विश्व बैक की मध्यस्ता, 1960
- अनेक विवादो के बावजूद यह संधि आज भी कायम है।

@vidyadrishti

शिमला समझौता

- भारत पाकिस्तान युद्ध 1971 के बाद 2 July को समझौता हुआ।
- श्रीमती इंदिरा गाँधी भारत और जुलफकार अली भुट्टो पाकिस्तान।
- इस द्विपक्षीय समझौते की प्रमुख शर्ते निम्नलिखित थी :-

1. दोनो समूह पारस्परिक झगड़ो को द्विपक्षीय बातचीत और निर्धारित शान्तिपूर्ण तरीके से हल करेगे।
2. दोनो देश एक दूसरे के क्षेत्रीय अखंडता और राजनीतिक स्वतंत्रता के विरुद्ध बल प्रयोग या धमकी का प्रयोग नही करेगे।
3. एक दूसरे की राष्ट्रीय एकता, क्षेत्रीय अखंडता, राजनीतिक स्वतंत्रता और सार्वभौमिक समानता का सम्मान करेंगे।
4. एक दूसरे के खिलाफ प्रचार नही करेंगे।
5. एक दूसरे की सीमाओं का सम्मान करते हुए अपनी- अपनी सेनाओं को युद्ध से पहले की स्थिति पर ले आएँगे।
6. पाकिस्तान बांग्लादेश के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करेगा और भारत पाकिस्तान के 10 हजार युद्ध बंदियों को रिहा करेगा।
7. दोनों देश परस्पर समान्य संबंध स्थापित करेंगे।

@vidyadrishti

बांग्लादेश संकट

पूर्वी पाकिस्तान मे पश्चिमी पाकिस्तान के विरुद्ध जनविद्रोह एवं आंदोलन के प्रमुख कारण :-

1. पूर्वी पाकिस्तान पर पश्चिमी पाकिस्तान का दबदबा।
2. पूर्वी पाकिस्तान के बाँगाली भाषा एवं संस्कृति के के साथ दुव्यवहार, उर्दू संस्कृति का थोपा जाना।
3. पूर्वी पाकिस्तान के सभी सीट जीतने के बाद भी अवामी लीग को लोकतांत्रिक सस्थाओ मे प्रतिनिधित्व न दिया जाना।
4. अवामी लीग की संघ बनाने की माँग को ठुकराया जाना।
5. शेख मुजीबुर्रहमान की गिरफ्तारी

👉 इस जनआंदोलन को भारत ने नैतिक एवं भौतिक समर्थन दिया जिसके कारण भारत और पाकिस्तान के बीच सीधे तौर पर युद्ध हुआ।

भारत द्वारा इस जनआंदोलन का समर्थन करने के पीछे कारण :-

1. लगभग 80 लाख शरणर्थी पूर्वी पाकिस्तान से भारत की सीमा में प्रवेश कर गए थे जो कि भारत के लिए एक शरणार्थी समस्या बन गया था।
2. अमेरिका तथा चीन द्वारा पाकिस्तान का समर्थन किया जाना।

निष्कर्ष :-

- अत: न चाहते हुए भी भारत को इस युद्ध मे शामिल होनी पड़ा।
- वस्तुत: शरणर्थी समस्या से निपटने एवं अमेरिक चीन तथा पाकिस्तान के त्रिगुट को माकूल जवाब देने के लिए भारत ने पूर्वी पाकिस्तान मे चलने वाले जनआंदोलन का समर्थन दिया।

बंगलादेश युद्ध का परिणाम

(1) जन धन की हानि

- भारत पाकिस्तान और बांग्लादेश तीनो जगहों पर जन धन की व्यापक हानि हुई।

(2) पाकिस्तान का विभाजन

- पाकिस्तान का विभाजन हो गया और बाग्लादेश के रूप मे एक नया प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र अस्तित्व मे आया।

(3) शरणार्थी समस्या

- लाखो लोग भारत मे शरणर्थी बन कर आए जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ा।

(4) तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की लोकप्रियता मे वृद्धि हुई।

(5) भारत के सैन्य प्रक्रम का प्रभाव दुनिया मे बढ़ा।

(6) शिमला समझौता हुआ।

भारत पाकिस्तान बदलते संबंध

(1) सिंधु नदी जल समझौता

(2) ताशकन्द समझौता

- 1965 के युद्ध मे पाकिस्तान पराजित हो गया
- उजबेकिस्तान (ताशकन्द) मे सोवियत संघ की मध्यस्तता से समझौता।
- भारत द्वारा पाकिस्तान के जीते हुए क्षेत्र वापिस कर दिए गए।
- लाल बहादुर शास्त्री (भारत) और आयुब खान (पाकिस्तान)

(3) बाँग्लादेश संकट

- शिमला समझौता और संबंधो मे सुधार

(4) राजीव गाँधी,1984

- आधिकारिक वार्ता का दौर शुरू हुआ।
- व्यापार, कृषि, विज्ञान तथा तकनीक के क्षेत्र मे सहयोग के लिए कई समझौते हुए।

(5) लाहौर बस यात्रा (कारगील युद्ध,1999)

- प्रधानमंत्री वाजपेयी जी द्वारा सद्भाव बढाने के लिए लाहौर बस यात्रा की गई तथा लाहौर घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर हुआ।

(6) 2001 मे आगरा वार्ता असफल, संसद पर आतंकवादी हमला

(7) 2003 प्रयास से पुन: कूटनीतिक प्रयास शुरू, 2004 मे क्रिकेट के माध्यम से संबंध सुधार का प्रयास।

(8) 2014 मे पाकिस्तान के प्रधानमंत्री का भारत दौरा

(9) हाल ही मे पठान कोर्ट, उरी,बाला कोर्ट हमला।

● निष्कर्ष :-

- वस्तुतः भारत पाकिस्तान संबंध कभी खत्म न होने वाले झगड़ों और हिंसा की कहानी से जुड़े हैं।
- फिर भी तनाव को कम करने एव शांति बहाली के लिए दोनो देश के बीच लगातार प्रयास हुए हैं।

भारत पाकिस्तान बेहतर संबंध के सुझाव

1.दोनो देशो के सामाजिक कार्यकर्ता और कला एवं खेल से जुड़ी हस्तियो के द्वारा संबंधो मे सुधार के लिए मध्यस्थता किया जाना चाहिए।

2. आतंकवाद जैसी साझी समस्या के समाधान के लिए एकजुटता दिखाया जाना चाहिए।

3. राजनीतिक स्तर के साथ आर्थिक स्तर पर भी प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न : 1971 का युद्ध भारत पर कैसे थोपा गया था? संक्षिप्त व्यख्या कीजिए।

प्रश्न : भारत और पाकिस्तान विवाद के कोई चार कारण बताए। संबंधों को बेहतर बनाने के लिए सुझाव दें।

प्रश्न : भारत पाकिस्तान बदलते संबंधों का मूल्यांकन करें।

भारत पाकिस्तान की समान समस्या

1. अशिक्षा और ग़रीबी
2. जनसंख्या वृद्धि
3. आर्थिक पिछड़ापन

@vidyadrishti

शीतयुद्ध के बाद पाकिस्तान मे लोकतान्त्रिक सरकारों का नेतृत्व

- बेनजीर भुट्टो
- नवाज शरीफ
- आशीफ अली जरदारी
- इमरान खान
- शाहबाज शरीफ

by - M H Rabbani

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

बांग्लादेश निर्माण की प्रक्रिया

- शेख मुजिबुर्ररहमान के नेतृत्व मे पूर्वी पाकिस्तान की जनता के दुगरा पश्चिमी पाकिस्तान के खिलाफ जनविद्रोह हुआ।
- इस जनविद्रोह को नैतिक एवं भौतिक समर्थन भारत द्वारा किया गया।
- परिणामस्वरूप भारत पाकिस्तान के बीच 1971 युद्ध हुआ जिसमे पाकिस्तान पराजित हुआ।
- एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप मे बाग्लादेश का निर्माण हुआ।

● इसके बाद निम्न प्रकार से बाग्लादेश मे प्रतिनिधिमूल लोकतंत्र की स्थापना :-

1. पाकिस्तान से मुक्त होने के बाद बांग्लादेश ने धर्मनिरपेक्षता , लोकतंत्र तथा समाजवाद मे विश्वास की घोषणा करते हुए अपने संविधान का प्रारूप तैयार किया।

2. 1975 मे शेख मुर्जीवुरहमान ने संसदीय सरकार को अध्यक्षत्मक सरकार मे परिवर्तन के लिए संविधान में संशोधन किया। इसी संशोधन के माध्यम से अवामी लीग के अतिरिक्त सभी पार्टीयों पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

3. 1975 मे ही एक सैन्य विद्रोह मे उनकी हत्या कर दी गयी। नया सैन्य शासक जियाउर रहमान ने स्वयं की "बॉग्लादेश नेशनल पार्टी " बनाई और 1975 के चुनाव को जीत लिया।

4. जियाउर रहमान की हत्या कर लेफ्टिनेंट जनरल एच. एम. इरशाद्र ने शासन पर कब्जा कर लिया। विरोध के कारण 1990 मे उसे गद्दी छोड़नी पड़ी।

(5)1991 चुनाव कराए गए और तभी से बाग्लादेश मे बहुदलीय व्यवस्था पर आधारित प्रतिनिधिमूलमूलक लोकतंत्र सफलतापूर्वक कायम है।

@vidyadrishti

प्रश्न : उन घटनाओं की श्रृंखालओ का वर्णन करे जिनहोने बाँग्लादेश का गठन किया।
प्रश्न : बॉग्लादेश के निर्माण के लिए उत्तरदायि परिस्थितियो की व्याख्या कीजिए।
प्रश्न : बहुदलीय प्रणाली पर आधारित प्रतिनिधिमूलक "लोकतंत्र की स्थापना मे बंगलादेश कैसे सफल हुआ ?
प्रश्न : स्वतंत्रता के बाद बांग्लादेश मे किस प्रकार की शासन व्यवस्था को अपनाया गया इसके क्या परिणाम रहें ?
प्रश्न : भारत और बांग्लादेश के बीच सहयोग एवं असहमति के क्षेत्रो का उल्लेख करे।

भारत बांग्लादेश संबंध

सहयोग / सहमति के बिंदु / सकारात्मक संबंध

(1) बांग्लादेश भारत की ACT east नीति का हिस्सा है। इस नीति के तहत मयंमार के जारिए दक्षिण पूर्व एशिया से संपर्क बनाने की योजना है।

@vidyadrishti

(2) व्यापारिक संबंध बेहतर।
(3) आपदा प्रबंधन एवं पर्यावरण के मामले पर दोनो देशो के बीच परस्पर सहयोगत्मक संबंध है।
(4) बांगलादेश को UNI का सदस्य बनाने मे भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
(5) दोनो देशो के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए मैत्री समझौता किया गया।
(6) 26 जून 1992 को तीन बीघा गलीयारा के हस्तांतरण को लेकर एक समझौता हुआ जिसके तहत भारत ने तीन बीघा गलीयारा बाँग्लादेश को पट्टे पर सौंप दिया परन्तु गलीयारे पर प्रशासनिक अधिकार भारत का है।
(7) आतंकवाद के मुद्दे पर सहयोग।

असहमति / विवाद के बिंदु / नकारात्मक संबंध

(1) गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी जल के बटवारे को लेकर विवाद।
(2) भारत मे बंगलादेशियों का अवैध प्रवास।

@vidyadrishti

(3) बांग्लादेश द्वारा भारत विरोधी इस्लामिक कटटरपंथी संगठन को सहयोग एवं समर्थन दिया।
(4) बांग्लादेश द्वारा भारतीय सैन्य टुकडियो को पूर्वोत्तर राज्य मे जाने के लिए अपने क्षेत्र से जाने देने की अनुमति न देना।
(5) भारत को प्राकृतिक गैस निर्यात करने से इंकार करना।
(6) म्यांमार द्वारा भारत को गैस आपूर्ति करने के लिए अपने क्षेत्र के प्रयोग की अनुमति न देना।

निष्कर्ष :-

👉 वस्तुत: वाँग्लादेश के अस्तित्व और स्वतंत्रता का श्रेय भारत को है फिर भी विभिन्न- मुद्दो को लेकर तनावपूर्ण संबंध है।

👉 भारत ने बांग्लादेश को हर परिस्थिति मे हर समय मदद की है लेकिन भारत को बांग्लादेश से वैसा सहयोग प्राप्त नही हुआ है जैसे भारत आशा करता है।

by - M H Rabbani

भारत - बांग्लादेश मैत्री संधि

- 19 मार्च 1972, इंदिरा गाँधी और शेख मुजीबुररहमान के बीच।

प्रावधान :-

(1) आर्थिक, तकनीकी, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रो मे एक-दूसरे का सहयोग करना।
(2) एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता एवं सीमाओ का सम्मान करना।
(3) किसी ऐसे देश की सहायता न करना जो दोनों मे से किसी के भी हित के विरुद्ध हो।
(4) उपनिवेशवाद का विरोध करना।

@vidyadrishti

बांग्लादेश एवं पाकिस्तान के बीच समानता एवं असमानता

लोकतांत्रिक अनुभवो के आधार पर दोनो के बीच निम्न समानताएँ एवं असमानताएँ पाई जाती है :-

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

समानता :-

(1) लोकतांत्रिक एवं सैन्य दोनो प्रकार का शासन रहा।
(2) शीत युद्ध के बाद दोनों देश मे लोकतंत्र कायम।
(3) दोनो ही देशो की जनता के द्वारा सैनिक शासन का विरोध और लोकतंत्र की हिमायत।

असमानता :-

(1) पाकिस्तान में लोकतंत्र के लिए अतर्राष्ट्रीय समर्थन का आभाव जबकि बांग्लादेश को समर्थन प्राप्त।
(2) पाकिस्तान मे लोकतांत्रिक शासन मे भी सेना का प्रभुत्व लेकिन बंगलादेश में ऐसा नही।
(3) पाकिस्तान के लोकतांत्रिक संस्थाओं पर आतंकवाद तथा सेना का साया जबकि बॉग्लादेश मे नही।

लुक ईस्ट [एक्ट ईस्ट] नीति,1991

- दक्षिण एशिया के देशो के साथ भारत अपने राजनैतिक और आर्थिक संबंध बेहतर करना चाहता है। पूर्वी एशिया से होते हुए दक्षिण एशिया से संबंध।
- इसके लिए भारत ने लुक ईस्ट (Act East) की नीति अपनाई है।
- इस नीति के अंतर्गत बाग्लादेश, म्यांमार इंडोनेशिया, सिंगापूर, मलेशिया से सीधा संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि साझे खतरे को पहचान कर तथा एक दूसरे की जरूरत के प्रति संवेदनशीलता बरत कर सहयोग के दायरे को बढ़ाया जा सके।

आर्थिक वैश्विकरण का दक्षिण एशिया पर प्रभाव

1. आर्थिक सुधार।
2. मुक्त व्यापार को बढ़ावा मिला।
3. आर्थिक सुविधाओ मे गुणात्मक सुधार।

@vidyadrishti

भारत की पड़ोसी देशों के प्रति नीति

पडोसी देशो के प्रति भारत की नीति के दो आधारभूत सिद्धांत हैं :-

1. सहयोग एवं विश्वास की नीति।
2. शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति।

by - M H Rabbani

मैकमोहन रेखा

- भारत तथा चीन के बीच।
- 1914 ई मे निर्धारित।
- 1956 तक चीन इसे मानता रहा लेकिन इसके बाद इसपर आपत्ति जताता है।

धारा 370

- इसके माध्यम से जम्मू कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा दिया गया था।
- अन्य राज्यों के मुकाबले ज्यादा स्वायतता (Autonomy) थी।
- जम्मू कश्मीर का अपना अलग संविधान, अलग झंडा था।
- राज्य विधानसभा के अनुमोदन से केंद्र का कानून लागू होता था।

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- भारत से ब्रिटिश शासन की समाप्ति - 14 अगस्त 1947
- ब्रिटिश शासन से श्रीलंका आजाद - 1948
- पाकिस्तान SEATO और CENTO मे शामिल - 1955
- भारत द्वारा प्रथम परमाणु परिक्षण - 1974
- भारत और बांग्लादेश के बीच गंगा नदी के जल बटवारे को लेकर 1966 मे - फरक्का जल संधि
- ग्रामीण क्षेत्र मे छोटी बचत और सहकारी ऋण की व्यवस्था के कारण इस देश को ग़रीबी कम करने मे मदद मिली - बंगलादेश
- 14 वाँ सार्क सम्मेलन - 2007 भारत मे अफ़ग़ानिस्तान सार्क मे शामिल

प्रश्न :- लोकतान्त्रिक अनुभवों के अधार पर बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच समानता और असमानता का उल्लेख करें।

प्रश्न : जातीय संघर्ष के बावजूद श्रीलंका की उच्च आर्थिक संवृद्धि का मूल्यांकन करें।

प्रश्न : 1965 में हुए भारत-पाकिस्तान युद्ध की किन्हीं चार मुख्य घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :- 1965 में भारत का पाकिस्तान के साथ युद्ध छिड़ा, जिसका मुख्य कारण कश्मीर समस्या थी। संभवत: पाकिस्तान को आशा थी कि भारत 1962 में चीन से हार चुका है और वह उसे हराकर कश्मीर पर अधिकार कर सकता है। परंतु भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के नेतृत्व में भारत ने पाकिस्तान को करारी मात दी। पाकिस्तान को यह भी आशा थी कि कश्मीर की जनता उसका समर्थन करेगी, परंतु ऐसा नहीं हुआ। इस युद्ध की मुख्य घटनाएँ निम्नलिखित थीं-

(i) 1965 के अप्रैल में पाकिस्तान ने गुजरात के कच्छ के रन में सैनिक हमला किया।

(ii) अगस्त-सितंबर के महीने में जम्मू कश्मीर में पाकिस्तान ने बड़े पैमाने पर हमला किया।

(iii) इसके उत्तर में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने पंजाब की सीमा की तरफ से हमले करने का आदेश दिए।

(iv) युद्ध के बाद भारतीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के जनरल अयूब खान के बीच जनवरी 1966 मे ताशकन्द समझौता हुआ।

कार्टून

सेना के जेनरल और पाकिस्तान के राष्ट्रपति के रूप में पाकिस्तान के शासक परवेज़ मुशर्रफ़ की दोहरी भूमिका की ओर यह कार्टून संकेत करता है। कार्टून में दिए गए समीकरण को ध्यान से पढ़ें और कार्टून के संदेश को लिखें।

● प्रथम समीकरण

◆ निर्वाचित नेता लेकिन सैन्य समर्थन नहीं अथार्थ सैन्य अध्यक्ष नहीं।

◆ प्रथम समीकरण में राष्ट्रपति की भूमिका में से जनरल की भूमिका को घटाकर यह दिखाया गया है कि राष्ट्रपति की शक्तियाँ जीरो हैं।

● दूसरे समीकरण

◆ सैन्य अध्यक्ष लेकिन राजनीतिक वैधता नहीं क्योंकि निर्वाचित नेता नहीं।

◆ दूसरे समीकरण में जनरल की भूमिका में से राष्ट्रपति की भूमिका को घटाकर यह दिखाया है कि जनरल की शक्तियाँ फिर भी कायम है अर्थात् राष्ट्रपति की शक्तियाँ या भूमिका जीरो है। लेकिन कोई खाश प्रभावशाली नहीं।

● तीसरे समीकरण

◆ सैन्य अध्यक्ष और निर्वाचित नेता भी यानि राजनीतिक वैधता भी प्राप्त।

◆ तीसरे समीकरण में जनरल और राष्ट्रपति की शक्तियों को जोड़ दिया गया है अर्थात् अगर जनरल चाहे तो शक्तियों में वृद्धि होती है। बहुत प्रभावशाली।

◆ उपर्युक्त कार्टून यह संदेश देता है कि परवेज मुशर्रफ को शक्तियाँ जनरल के रूप में हो प्रभावी हैं अर्थात् पाकिस्तान में सेना की भूमिका महत्त्वपूर्ण है और सेना का ही शासन है।

@vidyadrishti

1987 में जेनरल इरशाद के खिलाफ लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शन के दौरान पुलिस द्वारा मारे गए नूर हुसैन की याद में ढाका विश्वविद्यालय में दीवार पर बनी एक चित्रमाला उसकी पीठ पर अंकित है गणतंत्र मुक्त पाक। दीवार पर 'जय बांग्ला', 'जय बंगबंधु', 'विप्लवपर ही सच्चे इंसान हैं' और 'क्रांति ही मुक्ति का इकलौता रास्ता है' जैसे नारे लिखे हैं।

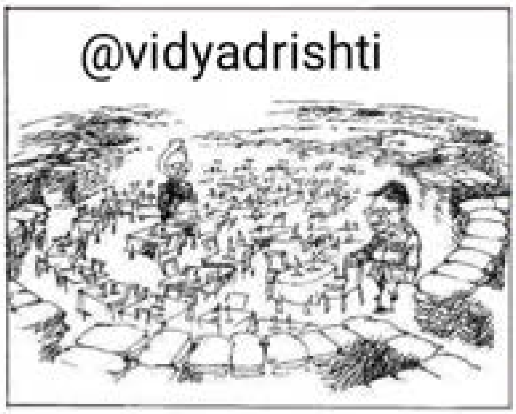

◆ भारत पाकिस्तान संबंध, दोनों देश एक दूसरे पर संदेह करते हैं।

◆ टेबल कुर्सी - दोनों देशों के बीच शांति स्थापना के लिए संवाद,

◆ बंकर - संवाद के साथ साथ एक दूसरे से सैन्य युद्ध की तैयारी भी साथ - साथ चल रही है।

◆ नेता - मनमोहन सिंघ और परवेज मशरुर्फ

◆ सार्क का मंच

◆ इंडिया और पाकिस्तान के द्विपक्षीय मुद्दों के कारण सार्क अप्रभावी।

◆ आमने सामने कुर्सीयों पर इण्डिया और पाकिस्तान।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

@vidyadrishti

by - M H Rabbani

- 1999, अटल विहारी वाजपेयी सीमा विवाद को अलग रख व्यापार आर्थिक क्षेत्र मे चीन के साथ बेहतर संबंध बनाने का प्रयास।
- परवेज मुशरर्फ भारत चीन संबंधों से खुश नहीं।
- भारत और पाकिस्तान के बीच अमेरिका की मध्यस्त की भूमिका।
- बाहरी शक्तियों अमेरिका और चीन का भारत - पाक संबंधों पर प्रभाव।

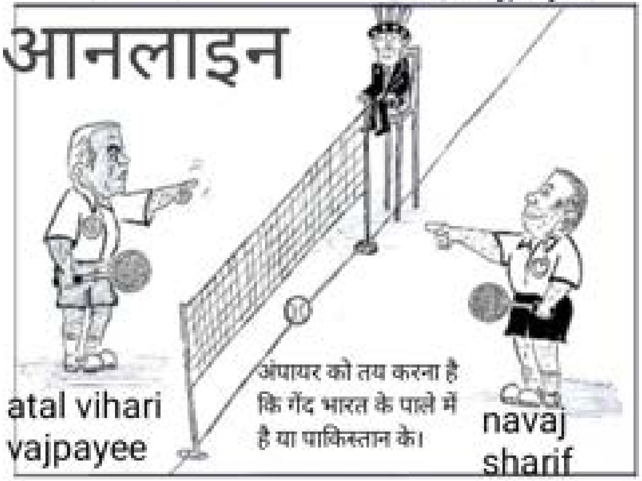

@vidyadrishti

प्रश्न- दक्षिण एशिया के दिए गए मानचित्र में चार देशों को (A), (B), (C), (D) के रूप में चिन्हित किया गया है। दी गई जानकारी के आधार पर इन देशों की पहचान कीजिए और उत्तर-पुस्तिका में उनके सही नाम के साथ उपयोग की गई जानकारी की संबंधित क्रम संख्या और संबंधित अक्षर निम्नानुसार लिखिए-

(i) यह सार्क संगठन का सबसे बड़ा देश है।

(ii) 2005 में इस देश को सार्क में शामिल करने की सहमति बनी।

(iii) वह देश जहाँ सार्क का मुख्यालय है।

(iv) सार्क का 13वाँ शिखर सम्मेलन इस देश में हुआ।

उपयोग की गई जानकारी की क्रम संख्या	संबंधित वर्णमाला	राज्य का नाम
(i)	(C)	भारत
(ii)	(D)	अफगानिस्तान
(iii)	(A)	नेपाल
(iv)	(B)	बांग्लादेश